स्वदेशी एवं कम प्रचलित तथा परिषद द्वारा प्रमाणित औषधियों का सामान्य रोगों में प्रभाव **

प्रमोद जी सिंह *

कर्णस्त्राव (कान का बहना)

1. **बैरायटा म्यूरियाटिकम**
   कान से दुर्गन्धयुक्त स्त्राव, कर्णशूल के साथ थोड़ा थोड़ा शीतल पेय लेने से आराम
   दाहिनी पैरोटिड ग्रन्थि में सूजन ।
   कान में छींकने, निगलने तथा चबाने से आवाज का अनुभव होना ।

2. **काली म्यूरियाटिकम**
   कर्णस्त्राव–गाढ़ा सफेद या पीला दुर्गन्धयुक्त।
   कर्ण के आस पास की ग्रन्थि का सूजन।
   मध्य कान में पुराने नजला के कारण स्त्राव।
   कान में शोर या चलने फिरने की तरह की आवाज सुनाई पड़ना।
   कर्ण से ज़्यादा स्त्राव।

बहरापन

1. **फेरम पिकरिकम**
   पुराने बहरापन तथा गठिया के साथ कान में शोर होना।
   मासिक स्त्राव से पहले बहरापन का अनुभव ।

2. **विस्कम एल्बम**
   बाँये कान का बहरापन ।
   श्रवण शक्ति की कमी ऐसा महसूस होना कि आवाज कम एवं क्षीण सुनाई देती है । दाहिने कान में गानों की आवाज़, चटकन तथा भनभनाहट का शब्द सुनाई पड़ना ।
   ठंड के कारण बहरापन आदि लक्षणों में यह लाभ प्रद हैं ।

कर्णशूल

1. **बैरायटा म्यूरियाटिकम**
   कान दर्द में थोड़ा–थोड़ा करके पानी पीने से आराम।

2. **माईगेल लेसिओडोरा**
   दाहिने कान में तीव्र दर्द ।

3. **मेन्था पिपरेटा**
   कान में फोड़े बनने के समान दर्द, तेज दर्द, दर्द का एक कान से दूसरे कान की ओर चला जाना ।

क्षय (राज यक्ष्मा)

1. **एकालिफा इंडिका**
   कठोर सूखी खांसी के बाद फेफड़े में खून आना
   उग्रता – प्रातः तथा रात्रि में ।
   रक्त चमकीले लाल रंग का प्रातः समय कम । दोपहर के समय गहरा लाल तथा थक्केदार रक्त ।
   छाती में तीव्र पीड़ा तथा लगातार दर्द का बना रहना।
   दुबलेपन में बढ़ोतरी प्रातः समय अधिक कमजोरी तथा दिन के समय बेहतर महसूस होना ।

2. **बैसीलिनम**
   इस रोग में रोगी को बलगम तथा श्वासकृच्छता की मुख्यः शिकायत होती है ।
   रोगी छाती से बलगम कम निकल पाता है ।
   कठोर खाँसी के साथ श्वास अवरोध के दौरे प्रायः रात्रि में आते हैं ।
   फेफड़े में जकड़न (कान्जेशन) बना रहता है तथा उसमें यह औषधि लाभप्रद है ।
   निरन्तर बार–बार सर्दी की प्रकषति ।

3. **कैलोट्रापिस जाइगेण्टिया**

4. **गेलिकम ऐसिडिम**
   फेफड़े में दर्द फेफड़े से रक्त स्त्राव, प्रचुर बलगम ।
   प्रातःकाल गले में अत्याधिक श्लेष्मा तथा रात्रि में सूखापन ।
   यह पेट को शक्ति देता है तथा भूख को बढ़ाता है ।

5. **अरेनिया डायडिमा**
   रक्त अल्पता एवं कमजोर प्रवषति के व्यक्तियों में उग्र रक्त स्त्राव (बलगम के साथ) में यह लाभप्रद हैं ।

साइनोसाइटिस

1. **कैसिया सोफेरा**
   नासावरोधता उग्रता रात्रि, में ठंड से, आराम दिन में तथा गरम से, रोगी को ऐसा महसूस होना कि बांयी नासिका बन्द हो गयी हैं।

---

* प्रभारी अधिकारी, चिकित्सा सत्यापन एकांश, वृन्दावन

** गंताक – केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्, त्रैमासिक पत्रिका पुस्तक संख्या 21 (3एवं4) 1999 से आगे

माथे में दर्द, उग्रता–रात्रि में तथा गति से, आराम दबाव से तथा लेटने से ।
कनपटी में दर्द उग्रता – गति से, आराम – दबाने तथा लेटने से ।
सिर के अग्रभाग (ललॉट) में सिलन जैसा दर्द उग्रता – शोर, गति एवं बातचीत से आराम, दबाने, टहलने तथा गरम सेंक से ।

1. काली म्यरियाटिकम
साइनस
पोस्ट नेजल स्त्राव – सफेद गाढा ।

काली खाँसी (व्हूपिंग कफ)

1. क्यूपरम एसिटिकम
दौरे युक्त खाँसी के साथ स्त्राव सख्त, चिपचिपा तथा दम घुटने का भय ।
श्वास अपूर्ण एवं कठिनाई युक्त ।
खाँसी उग्र, दौरे युक्त तथा छाती में खिंचाव ।

2. जस्टिशिया अथाटोडा
दौरे युक्त खाँसी के साथ श्वास अवरोध तथा घुटन ।
छाती का कसाव ।
खाँसी के साथ छींके तथा तीव्र श्वास कृच्छता ।
स्टर्नल हिस्से से शुष्क खाँसी का उठना तथा सारे शरीर में फैल जाना ।

3. विसकम एलबम
दौरे युक्त खाँसी ।

नकसीर (नासा रक्त स्त्राव, "एपिसटैक्सिस")

1. एकालिफा इंडिका
प्रातः सूर्खलाल, सांयकाल गहरे रंग में ।

2. कैनाविस स्टाइवा
नकसीर से पहलीं नाक में जलन महसूस करना ।
नाक खुश्क तथा उष्ण ।

3. टरेन्टुला हिस्पैनिका
नाक से प्रचूर काला रक्त स्त्राव तथा शीघ्र ही उसका थक्का बन जाना ।
बाँयी नासिका में तेज खुजली तथा छीकें ।

4. थिया चाइनेसिस
मासिक से पूर्व नाक से रक्त तथा नाक में पीड़ा ।

पित्त दर्द (बिलियरी कालिक)

1. अटिस्टा इंडिका
पित्त दर्द, खट्टी डकारें एवं वमन उग्रता – शीघ्र भोजनोपरान्त।
उदर वायु, आराम डकारने से (कषमि के कारण अजीर्णता)।

2. बर्बेरिस बुाल्गेरिस
नाश्ते से पूर्व मिचली ।
पित्त की थैली में सिलने की तरह का दर्द जो फैलकर आमाश्य तक पहुँच जाता है, । उग्रता दबाव से, कटि स्थान में सियन की तरह दर्द जो फैलकर जिगर तित्ती आमाश्य तथा अरू सन्धि तक पहुँच जाता हैं । (पुराने गठिया की प्रकषति) ।

3. जलापा
पेट में उदर वायु, तनाव, मिचली तथा दाहिने ऊपरी भाग में दर्द ।

4. मेन्था पिपरेटा
संध्या होते ही निश्चित समय पेट का दर्द प्रारम्भ हो जाना ।
बच्चों का पेट दर्द ।
उदर तनाव के साथ अव्यवस्थित निन्द्रा ।

5. अरेनिया डायडिमा
संध्या होते ही निश्चित समय पेट का दर्द प्रारम्भ हो जाना ।
खाने के कारण सिर दर्द तथा दर्द का दौरा पड़ना ।

वमन

1. एल्स्टोनिया कंस्ट्रिक्टा
गर्भावस्था में वमन मिचली, उग्रता प्रातः नाश्ते से पूर्व।

2. बर्बेरिस वुल्गेरिस
रात्रि भोजन से पूर्व वमन होना ।

3. आइरिस टिनेक्स
वमन में हरा पीला चिकना पदार्थ निकलना उसमें कड़वाहट नहीं होना । आराम – चाय पीने से ।

4. टैरेन्टुला हिस्पैनिका
खाने के बाद तथा बिस्तर से बाहर वमन वमन साथ मुख का स्वाद कड़वा तथा भूख की कमी ।

5. निक्टैथिस आर्बोट्रिस्टिस
खट्टी चीजें नीबूँ आदि खाने की इच्छा ।
दही खाने के बाद मिचली तथा वमन पित्त की तरह की ।

अतिसार (पेचिस)

1. ऐकाइरेन्थिस ऐसपेरा
मल आँव युक्त, प्यास तथा अत्याधिक कमजोरी जलन ।

2. ईगल फोलिया
मल, पतला, पीला श्लेश्मा मिश्रित तथा बार – बार जाने की इच्छा । थोड़ा मल निकलना साथ ही पेट में दर्द का होना ।

3. एल्स्टोनिया कंस्ट्रिक्टा
गन्दे पानी तथा मलेरिया के कारण पेचिश ।
खूनी मल ।
उग्र दस्त तथा आंतों में ऐंठन ।
पेट और आमाशय में खालीपन एवं सवेदन शीलता के साथ अधिक कमजोरी ।

4. अटिस्टा इंडिका
सभी तरह की पेचिश, एमिबिक तथा बैसिलरी में लाभ प्रद।
मल श्वेत रक्त मिश्रित या शुद्ध रक्त मिश्रित के साथ भंयकर पेट दर्द जो नाभि प्रदेश के चारों ओर होता हैं ।
पेट में ऐंठन, मल त्याग के दौरान पूर्व तथा बाद में बनी रहती हैं ।

5. साइनोडान डेक्टिलान
मल जलीय पीले रंग का तथा बार–बार जाने की इच्छा के साथ नाभि प्रदेश के पास पकड़ सा दर्द महसूस होना।
मल श्लेष्मा मिश्रित, कभी –कभी श्लेश्मा के साथ रक्त मिश्रित भी जाता है।

6. होलाारिना एण्टि डायसेंटिरिका ·
मल पतला पीला तथा आंव मिश्रित के साथ नाभि प्रदेश के पास पकड़ सा दर्द आराम शौच के पश्चात ।

7. सिफलेण्डरा इंडिका
मल पतला आंव मिश्रित तथा कभी रक्त मिश्रित के साथ अत्याधिक प्यास पेट व मलद्वार में जलन, दर्द शौच के पूर्व तथा मध्य में होता है ।

8. टर्मिनेलिया चेबुला
पुरानी पेचिश मल थोड़ा एवं आव युक्त।